Toppersnotes®
Unleash the topper in you

BPSC

Prelims & Mains

बिहार लोक सेवा आयोग

सामान्य हिन्दी एवं निबंध लेखन

SIERRA INNOVATIONS

BPSC

सामान्य हिन्दी

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	संज्ञा	1
2.	सर्वनाम	6
3.	उपसर्ग	8
4.	प्रत्यय	11
5.	संधि	15
6.	समास	32
7.	विशेषण	41
8.	क्रिया	42
9.	कारक एवं विभक्ति	44
10.	वर्तनी शुद्धि	50
11.	शुद्ध – वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि	53
12.	विलोम – शब्द	64
13.	पर्यायवाची	72
14.	मुहावरे	75
15.	लोकोक्ति	85
16.	वाक्य के लिए एक शब्द	98
17.	निबंध – लेखन	104
18.	संक्षेपण	109
19.	वाक्य विचार	118

निबंध लेखन

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**एक अच्छा निबंध कैसे लिखें एक अवलोकन** • निबंध क्या है? • एक निबंध को क्या नहीं होना चाहिए.... • एक अच्छे निबंध के अवयव	130
2.	**BPSC मुख्य परीक्षा निबंध के विशिष्ट पहलू** • निबंध पेपर पैटर्न • BPSC - निबंध के पेपर में अच्छे अंक कैसे प्राप्त करें? • निबंध लेखन का दृष्टिकोण • विषय चुनने का आधार • निबंध से क्या अपेक्षा की जाती है? • निबंध के विषय का संदर्भ	132

	• मुख्य शब्द की परिभाषा • दो उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहिए • दार्शनिक निबंध कैसे लिखें	
3.	**महिला सशक्तिकरण**	**137**
4.	**भारत में शिक्षा**	**141**
5.	**भारत में स्वास्थ्य सेवा** • परिचय • स्वास्थ्य संबंधी संवैधानिक प्रावधान • हेल्थकेयर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता • कोविड महामारी के दौरान स्वास्थ्य सेवा • स्वास्थ्य सेवा के संबंध में सरकारी योजनाएं • भारत में सर्वोत्तम अभ्यास • दुनिया में सर्वोत्तम अभ्यास • भारत में स्वास्थ्य की चुनौतियां • भारत में स्वास्थ्य देखभाल के लिए सुझाव • निष्कर्ष	**146**
6.	**भारत में शहरी योजना भारत के भावी शहरों का निर्माण**	**150**
7.	**वैश्वीकरण, इसके निहितार्थ और हाल के रुझान**	**153**
8.	**कृषि**	**156**
9.	**जलवायु परिवर्तन** • परिचय • जलवायु परिवर्तन के साक्ष्य • जलवायु परिवर्तन का प्रभाव • पृथ्वी पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को दर्शाने वाली घटनाएँ • जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कारक • जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भारत द्वारा की गई प्रमुख कार्रवाई • वैश्विक प्रतिक्रिया • निष्कर्ष	**160**
10.	**कृत्रिम बुद्धिमता**	**164**
11.	**क्रिप्टोकरेंसी आर्थिक सशक्तिकरण का एक उपकरण या एक नियामक दुःस्वप्न**	**168**
12.	**सोशल मीडिया और उसकी बुराई**	**171**
13.	**भारत में पर्यटन**	**175**
14.	**रक्षा उद्योग का स्वदेशीकरण आयातक से निर्यातक तक** • निष्कर्ष • परिशिष्ट A ○ उद्धरणों का संग्रह ○ व्यक्तिगत रूप से उद्धरणों का संग्रह	**177**

संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
  जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

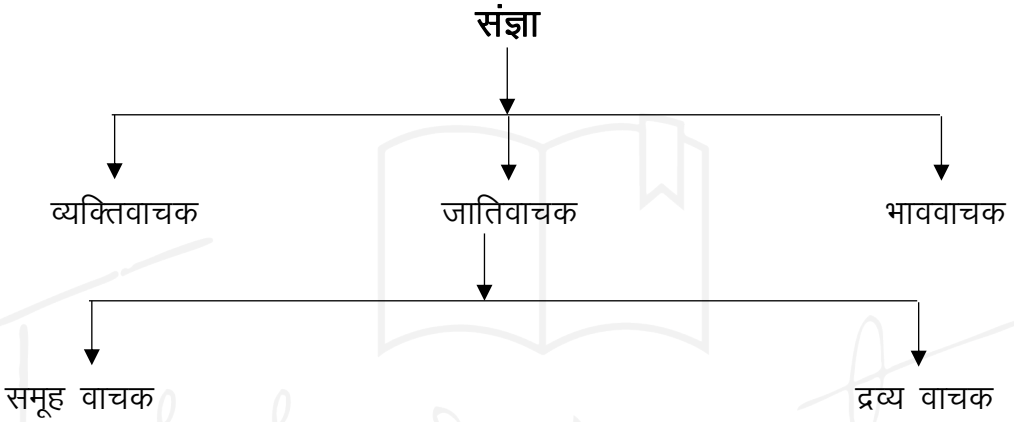

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3. **भाववाचक संज्ञा –** जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
   - प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
   - भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
     1. जातिवाचक संज्ञा से
     2. सर्वनाम से
     3. विशेषण से
     4. क्रिया से
     5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालाक	चालाकी
निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट
खेलना	खेल
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा –** ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा –** किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे – दूध, घी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, आक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।
   नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।

सरदार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।

जैसे –

गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों

Toppersnotes
Unleash the topper in you

सर्वनाम

परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
  जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहनें वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

   पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है

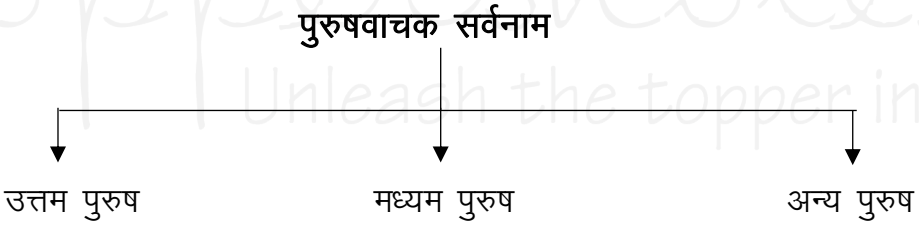

   (i) **उत्तम पुरुष** – बोलने वाला / लिखने वाला
   जैसे – मैं, हम, हम सब।

   (ii) **मध्यम पुरुष** – श्रोता/सुनने वाला
   जैसे – तू , तुम, आप, आप सब।

   (iii) **अन्य पुरुष** – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारें में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
   जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. **निश्चय वाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
   पास की वस्तु के लिए – यह
   दूर की वस्तु के लिए – वह

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम –** वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारें में निश्चतता का बोध नहीं होता हैं। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
   जैसे – कोई
   - सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
     निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
   - रमन को कोई बुला रहा है।
   - दूध मे कुछ गिरा है।

4. **संबंधवाचक सर्वनाम –** दो उपवाक्यों के बीच आकर सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
   जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।
   जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता हैं वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।
   जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?
   कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?

6. **निजवाचक सर्वनाम –** ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
   जैसे – आप, स्वयं, खुद।
   जैसे – मैं अपने <u>आप</u> चला जाऊँगा।

   सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।
   (i) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।
   (ii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।
   (iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति में परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

उपसर्ग

उपसर्ग – उप + सर्ग से बना है । उप का अर्थ समीप व सर्ग का अर्थ रचना होता है ।
परिभाषा – वे शब्दांश जो किसी शब्द के पूर्व जुडकर अर्थ में परिवर्तन कर देता है और नये सार्थक शब्द की रचना कर देता है, उन्हे उपसर्ग कहते है ।

- उपसर्ग किसी शब्द के पूर्व ही जुडते है । उपसर्ग शब्द नही होते शब्दांश होते है शब्द का टुकडा ।
- उपसर्गो का स्वतंत्र अर्थ नही होता और जो उनका अर्थ होता है वह प्रभावित नही करता है ।
- उपसर्गो का अर्थ किसी शब्द के पूर्व लगकर ही अर्थ को प्रभावित करते है ।
- उपसर्ग तीन तरह से अर्थ को प्रभावित करते है –
  1. सकारात्मक अर्थ
  2. नकारात्मक अर्थ
  3. विलोमार्थ/ विलोम जैसा

1. सकारात्मक – आचार्य – प्राचार्य
   सिद्धि – प्रसिद्धि

2. नकारात्मक – हार – प्रहार
   हार – संहार
   मान – अपमान

उदाहरण –

आ + हार – आहार	=	भोजन
प्र + हार – प्रहार	=	आक्रमण
सम् + हार – संहार	=	मारना
उप + हार – उपहार	=	भेंट
वि + हार – विहार	=	घूमना
नि + हार – निहार	=	देखना
परि + धान	=	परिधान – वस्त्र
प्र + धान	=	प्रधान – मुख्य
उप + धान	=	उपधान – तकिया
अपि + धान	=	अपिधान – ढक्कन
अभि + धान	=	अभिधान – नाम
वि + धान	=	विधान – कानून

- उपसर्ग का स्वतंत्र रूप में प्रयोग नही होता है । इनका प्रयोग शब्दों के साथ ही होता है और शब्दो के साथ लगकर ही अर्थ को प्रभावित करते है जो निम्नानुसार है –
- उपसर्गो के प्रकार
  1. संस्कृत के उपसर्ग
  2. हिन्दी के उपसर्ग
  3. विदेशी उपसर्ग

उपसर्गो की संख्या (22)

- प्र
- परा
- अप
- सम्
- अनु
- अव
- निस्
- निर
- दुस
- दुर्
- वि
- आ
- नि
- प्रति
- परि
- उप
- अपि
- अति
- सु
- उद्
- अभि
- अधि

1. प्र उपसर्ग – आगे / अधिक
   प्रगति – प्र + गति
   प्राचार्य – प्र + आचार्य (दीर्घ संधि)
   प्रख्यात – प्र + ख्यात (संयोग)
   प्रतीत – प्र + अतीत
   प्रोन्नति – प्र + उन्नति (गुण सन्धि)
   प्रत्येक – प्रति + एक
   प्रकार – प्र + कार
   प्रचुर – प्र + चुर
   प्रतीत – प्रति + इत
   प्रकृति – प्र + कृति
   प्राकृतिक – प्र + कृति + इक
   प्राध्यापक – प्र + अध्यापक

2. परा उपसर्ग – अधिक/पीछे
   पराजय – परा + जय
   पराकाष्ठ – परा + काष्ठ
   पराभव – परा + भव
   पराविद्या – परा + विद्या

पराक्रम – परा + क्रम
पराकाष्ठा – परा + काष्ठा
पराभव – परा + भव
परामर्श – परा + मर्श

3. अप उपसर्ग – बुरा / हीन
अपमान – अप + मान (संयोग)
आपराधिक – अप + राध + इक
अब्ज – अप् + ज
अब्द – अप् + द
अपेक्षा – अप + ईक्षा (गुण सन्धि)
अपहरण – अप + हरण
अपभरण – अप + भरण
अपव्यय – अप + व्यय
अपकार – अप + कार
अपंग – अप + अंग
अपांग – अप + अंग

4. सम् उपसर्ग – समान – विशुद्ध
संस्कार – सम् + कार
संस्कृति – सम् + कृति
संविधान – सम् + वि + धान
सम्मान – सम् + मान
समाचार – सम् + आचार
संशय – सम् + शय
सांस्कृतिक – सम् + कृति + इक

5. अनु उपसर्ग – पीछे / विपरीत
अन्वय – अनु + अय
आनुवांशिक – अनु + वंश + इक
अनुदार – अनु + दार
अनूदार – अनु + उदार
अनुदान – अनु + दान
अनुपातिक – अनु + पात + इक
अनुसार – अनु + सार
अनूदित – अनु + उदित
आनुषंगिक – अनुषंग + इक

6. अव उपसर्ग – बुरा / हीन
अवतार – अव + तार
अवधान – अव + धान
अवध – अव + ध
अवज्ञा – अव + ज्ञा
अवमानना – अव + मानना
अवहेलना – अव + हेलना
अवसर – अव + सर

7. निस् उपसर्ग – निषेध, बाहर
निश्चय – निस् + चय
निष्फल – निस् + फल
निश्छल – निस् + छल
निष्पाप – निस् + पाप
निश्चिन्तता – निस् + चिन्तता
निस्संकोच – निस् + संकोच
निश्शुल्क/निःशुल्क – निस् + शुल्क

8. निर् उपसर्ग – निषेध, बाहर
निर्जन – निर् + जन (संयोग)
निर्धन – निर् + धन
नीरस – निर् + रस
नीराग – निर् + राग
निरन्तर – निर् + अन्तर
निरंजन – निर् + अंजन
निरादर – निर् + आदर
निराशा – निर् + आशा
नीरव – निर + रव
नीरन्ध्र – निर + रन्ध्र
नोट – नीरज (नीर+ज) में निर् उपसर्ग नहीं होता है ।

9. दुस् उपसर्ग – बुरा, हीन, विपरीत
दुश्चिन्ता – दुस् + चिन्ता
दुश्चरित्र – दुस् + चरित्र
दुष्पाप – दुस् + पाप
दुष्फल – दुस् + फल
दुश्मन – दुस् + मन
दुष्परिणाम – दुस् + परिणाम
दुश्शासन – दुस् + शासन
दुष्प्रभाव – दुस् + प्रभाव

10. दुर् उपसर्ग – बुरा, हीन, विपरीत
दुर्गम – दुर् + गम
दुर्ग – दुर् + ग
दुर्जन – दुर् + जन
दुर्दशा – दुर् + दशा
दुरवस्था – दुर् + अव + स्थ + आ, दुरावस्था नहीं होती है ।
दुराशा – दुर् + आशा
दूरम्य – दुर् + रम्य
दौर्बल्य – दुर् + बल + य

11. वि उपसर्ग – विशेष या भिन्न
व्यास – वि + आस
व्याकरण – वि+ आ + करण
व्याकुल – वि + आकुल
व्यावहारिक – वि + अव + हार + इक
वैधव्य – वि + धवा + य

विवाह – वि + वाह
वैवाहिक – वि + वाह + इक
विजय – वि + जय
व्यूह – वि + ऊह
व्यायाम – वि + आयाम
वीक्षक – वि + ईक्षक
वीप्सा – वि + ईप्सा

12. आ उपसर्ग – तक / से
आजन्म – आ + जन्म
आमरण – आ + मरण
आम – आ + म
आजानुबाहु – आ + जानुबाहु
आकाश – आ + काश
आकण्ठ – आ + कण्ठ

13. नि उपसर्ग – नीचे, कमी
निषंग – नि + षंग
न्यास – नि + आस
न्याय – नि + आय
न्यस्त – नि + अस्त
निवास – नि + वास
निषेध – नि + षेध
निष्ठा – नि + स्था
न्यून – नि + ऊन
नैदानिक – निदान + इक

14. अधि उपसर्ग – श्रेष्ठ /ऊपर
अधित्यका – अधि + त्यका
अध्यक्ष – अधि + अक्ष
अधिक – मलू शब्द है
अध्याय – अधि + आय
अधीन – अधि + इन
अधीत – अधि + इत
अधिकार – अधि + कार
अध्यादेश – अधि + आदेश
अधीक्षक – अधि + ईक्षक
आध्यात्मिक – अधि + आत्मिक

15. अपि उपसर्ग – भी, परे
अपितु – अपि + तु
अप्यलम – अपि + अलम (थोडा)
अपिहित – अपि + हित
अपिधान – अपि + धान

16. अति उपसर्ग – अधिक
अत्यन्त – अति + अन्त
अत्याचार – अति + आचार
अतीत – अति + इत
अत्यधिक – अति + अधिक
अत्यल्प – अति + अल्प

17. सु उपसर्ग – सरल / सुन्दर
स्वच्छ – सु + अच्छ
स्वल्प – सु + अल्प
स्वागत – सु + आगत
सूक्ति – सु + उक्ति
सौजन्य – सु + जन + य

18. उद्, उत् उपसर्ग – श्रेष्ठ / ऊपर
उच्चारण – उत् + चारण
उच्छवास – उत् + श्वास
उच्छृंखला – उत् + श्रृंखला
उन्नति – उत् + नति
उत्तीर्ण – उत् + तीर्ण

19. अभि उपसर्ग – सामने / पास
अभ्यास – अभि + आस
अभ्यर्थी – अभि + अर्थी
अभ्यागत – अभि + आगत
अभीष्ट – अभि + इष्ट
अभीप्सा – अभि + ईप्सा
अभ्यागत – अभि + आगत

20. प्रति उपसर्ग – प्रत्येक / सामने
प्रत्युषा – प्रति + उषा
प्रत्येक – प्रति + एक
प्रतिदिन – प्रति + दिन
प्रत्युपकार – प्रति + उपकार
प्रत्यर्पण – प्रति + अर्पण
प्रतिज्ञा – प्रति + ज्ञा
प्रतिष्ठा – प्रति + स्था
प्रतीक्षा – प्रति + ईक्षा

21. परि उपसर्ग – चारो ओर / पास
पर्यावरण – परि + आवरण
परीक्षा – परि + ईक्षा
परितः – उपसर्ग नही मूल शब्द
पर्याप्त – परि + आप्त
पर्यंक – परि + अंक
पारिवारिक – परिवार + इक

22. उप उपसर्ग – समीप / नीचे
उपत्यका – उप + अति + अका
उपकार – उप + कार
उपदेश – उप + देश
उपेक्षा – उप + ईक्षा
उपाध्यक्ष – उप + अधि + अक्ष
उपमंत्री – उप + मंत्री
उपाचार्य – उप + आचार्य
औपचारिक – उपचार + इक
औपनिवेशक – उप + निवेश + इक

प्रत्यय

परिभाषा – वे शब्दांश जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण और क्रिया/धातु के बाद लगकर नये सार्थक शब्द की रचना कर देते है और अर्थ में परिवर्तन कर देते है उन्हे प्रत्यय कहते है ।

प्रत्यय के प्रकार –

1. कृदन्त प्रत्यय (धातु के बाद के प्रत्यय)
2. तद्धित प्रत्यय (शब्द के बाद के प्रत्यय)

- धातु के बाद में जो प्रत्यय लगता है उसे कृदन्त प्रत्यय कहते है ।
- शब्दो के बाद में जो प्रत्यय लगते है उन्हे तद्धित प्रत्यय कहते है ।

कृदन्त प्रत्यय के भेद –

1. कर्तृवाचक
2. कर्मवाचक
3. भाववाचक
4. क्रियावाचक
5. करण वाचक/साधनवाचक

तद्धित प्रत्यय के भेद –

1. कर्तृवाचक
2. भाव वाचक
3. सम्बन्ध वाचक
4. अपत्यवाचक / सन्तान वाचक
5. ऊनतावाचक / न्यूनतावाचक कर्म वाचक
6. स्त्रीवाचक

कृदन्त प्रत्यय

1. कर्तृवाचक

उदाहरण –

लेख	+	अक	– लेखक
वाच	+	अक	– वाचक
गै	+	अक	– गायक
कृ	+	अक	– कारक
चाल	+	अक	– चालक
भूल	+	अक्कड	– भुलक्कड
घुम	+	अक्कड	– घुमक्कड
पी	+	अक्कड	– पियक्कड
लुट	+	एरा	– लुटेरा

2. कर्मवाचक

उदाहरण –

खेल	+	औना	– खिलौना
बिछ	+	औना	– बिछौना
सूंघ	+	नी	– सूंघनी

3. भाववाचक

उदाहरण –

बैठ	+	अक	– बैठक
उठ	+	अक	– उठक
दिखा	+	आऊ	– दिखाऊ
टिक	+	आऊ	– टिकाऊ
भिड	+	अन्त	– भिडन्त
लड	+	आई	– लडाई
घुम	+	आव	– घुमाव
लिख	+	आवट	– लिखावट
घबरा	+	आहट	– घबराहट
बोल	+	ई	– बोली
चुन	+	आती	– चुनौती
बैठ	+	नी	– बैठनी
कट	+	आई	– कटाई

4. क्रिया बोधक

उदाहरण –

चल	+	हुआ	– चलता हुआ
सुन	+	हुआ	– सुनता हुआ
पढ	+	हुआ	– पढता हुआ

5. करणवाचक साधान

उदाहरण –

बेल	+	अन	– बेलन
झाड	+	अन	– झाडन
खुरच	+	अन	– खुरचन
लेखन	+	नी	– लेखनी
कतर	+	नी	– कतरनी
छल	+	नी	– छलनी

तद्धित प्रत्यय

1. कर्तृवाचक

लोहा	+	आर	– लुहार
कहा	+	आर	– कहार
गँवा	+	आर	– गँवार
सोना	+	आर	– सुनार
घास	+	आरा	– घासियारा
लाख	+	एरा	– लखेरा

2. भाववाचक

भला + आई – भलाई
बुरा + आई – बुराई
अच्छा + आई – अच्छाई
मोटा + आपा – मोटापा
बुढा + आपा – बुढापा
टीका + आयन – टीकायन
मीठा + आस – मिठास
बाप + औती – बापौती
लडका + पन – लडकपन
पागल + पन – पागलपन
बच्चा + पन – बचपन
छोटा + पन – छुटपन
लाल + इमा – लालिमा
गुरू + इमा – गरिमा
गर्म + ई – गर्मी

3. सम्बन्ध वाचक

ससुर + आल – ससुराल
नानी + आल – ननिहाल
मामा + एरा – ममेरा
चाचा + एरा – चचेरा
रस + ईला – रसीला
जहर + ईला – जहरीला
पानी + ईला – पनिला – पानी जैसा रंग
कृपा + आलु – कृपालु
ईर्ष्या + आलु – ईर्ष्यालु
दया + आलु – दयालु
भाव + उक – भावुक
इच्छा + उक – इच्छुक
समाज + इक – सामाजिक
व्यवहार + इक – व्यावहारिक
चरित्र + इक – चारित्रिक

4. अपत्यवाचक (संतान वाचक)

मूलस्वर	दीर्घस्वर	गुणस्वर	वृद्धि स्वर
अ	आ	–	आ
इ	ई	ए	ऐ
उ	ऊ	ओ	औ
ऋ	ॠ	अर्	आर्

उदाहरण –

इक प्रत्यय

यदृच्छा + इक – यादृच्छिक
सर्वभूमि + इक – सार्वभौमिक
चरित्र + इक – चारित्रिक
समर + इक – सामरिक
व्यक्ति + इक – वैयक्तिक/व्यक्तिक
पशु + इक – पाशविक
न्याय + इक – न्यायिक/ नैयायिक

अ प्रत्यय

मगध + अ – मागध
मनु + अ – मानव
दनु + अ – दानव
पांडु + अ – पांडव
सिंधु + अ – सैन्धव
मुनि + अ – मौन
ओष्ठ + अ – औष्ठव

इ प्रत्यय

दशरथ + इ – दाशरथी
मरूत + इ – मारूति
सरथ + इ – सारथि
वल्मीक + इ – वाल्मीकि

ई प्रत्यय

जनक + ई – जानकी
गंधार + ई – गांधारी
द्रुपद + ई – द्रौपदी
मिथिला + ई – मैथिली
भागीरथ + ई – भागीरथी

अयन प्रत्यय

राम + अयन – रामायण
नार + अयन – नारायण

आयन प्रत्यय

काव्य + आयन – काव्यायन
वात्स्य + आयन – वात्स्यायन
मौद्गल्य + आयन – मौद्गल्यायन

एय प्रत्यय

गंगा + एय – गांगेय
मृकंड + एय – मार्कंडेय
कृतिका + एय – कार्तिकेय
पथ + एय – पाथेय

य प्रत्यय

सदृश + य – सादृश्य
सहचर + य – साहचर्य
वत्सल + य – वात्सल्य
कवि + य – काव्य
महात्मा + य – माहात्म्य
मधुर + य – माधुर्य
धीर + य – धैर्य
दीन + य – दैन्य

दीति	+	य	–	दैत्य
विधवा	+	य	–	वैधव्य
ईश्वर	+	य	–	ऐश्वर्य
वृधक्	+	य	–	वार्धक्य
पृथक्	+	य	–	पार्थक्य
शूर	+	य	–	शौर्य
उचित	+	य	–	औचित्य
सुन्दर	+	य	–	सौन्दर्य
एक	+	य	–	ऐक्य
स्वस्थ	+	य	–	स्वास्थ्य

5. ऊनतावाचक / न्यूनतावाचक प्रत्यय (छोटा होना)

उदाहरण –

बाबू	+	उआ	–	बबूआ
लाठी	+	इया	–	लठिया
डिब्बा	+	इया	–	डिबिया
खाट	+	इया	–	खटिया
लोटा	+	इया	–	लुटिया
प्रस्तुति	+	करण	–	प्रस्तुतीकरण
खाट	+	ओला	–	खटोला
माँझ	+	ओला	–	मंझोला
साँप	+	ओला	–	संपोला
मंडल	+	ई	–	मंडली
टोकरा	+	ई	–	टोकरी
रस्सा	+	ई	–	रस्सी
नाला	+	ई	–	नाली

6. स्त्रीलिंग प्रत्यय

उदाहरण –

पति	+	नी	–	पत्नी
प्रिय	+	आ	–	प्रिया
छात्र	+	आ	–	छात्रा
शिष्य	+	आ	–	शिष्या
कुत्ता	+	इया	–	कुतिया
चिडा	+	इया	–	चिडिया
देव	+	ई	–	देवी
बेटा	+	ई	–	बेटी
ठाकुर	+	आइन	–	ठाकुराइन
पंडित	+	आइन	–	पंडिताइन
मुंशी	+	आइन	–	मुंशीआइन
देवर	+	आनी	–	देवरानी
इन्द्र	+	आनी	–	इन्द्राणी
सेठ	+	आनी	–	सेठानी
लेखक	+	इका	–	लेखिका
कमल	+	इनी	–	कमलिनी
यक्ष	+	इनी	–	यक्षिनी
शेर	+	नी	–	शेरनी
मोर	+	नी	–	मोरनी
नट	+	नी	–	नटनी

कुछ अन्य महत्वपूर्ण प्रत्यय

आ – आटा, घेरा, छापा, गुजारा
आई –गढाई, चराई, पढाई, रूलाई, लिखाई,लडाई
आन –उठान, पिसान, मिलान, लगान, मकान, खदान
आप – मिलाप, कलाप, अलाप, प्रलाप, विलाप, संथान
आव – उतराव, घुमाव, चलाव, चुनाव, बनाव
आस – निकास, हुलास, विकास, गिलास, विलास,प्यास
इया – बढिया, घटिया, मइया, भुइया, गइया, भइया
ई – चढाई, लडाई, बडाई, पढाई, लिखाई, हंसी,
औनी – कमौनी, लिखौनी, उठौनी, नचौनी, गवौनी
त – खपत, बचत, लागत, जपत, बनत, बिगडत, हंसत
ती – चढती, बढती, घटती, रटती, पटती, श्रीमती
न्ती – चढन्ती, बढन्ती, घटन्ती, उठन्ती, गिरन्ती,
न – उद्घाटन,पुरान, देन, मारन, मोहन, लगन, लेनदेन
नी – कटनी, मरनी, भरनी, लडनी, अनी, ठनी
र – ठोकर, जोकर, मकर, बेर, केर, नीर, क्षीर
वट – तरावट, लिखावट, सजावट, बनावट, केवट
हट – आहट, चिल्लाहट, घबराहट, बुलबुलाहट
अंकू – उंकू, अडंकू, पडाकू
अक – लेखक, पाठक, वाचक, नायक, सम्प्रदायक, सार्थक, दीपक, वाचक
अक्कड – पियक्कड, बुझक्कड, भुलक्कड, कुदक्कड
आ – चढा, रखा, कटा, भूंजा, फोडा, चला
आक – पैराक, तैराक, तडाक, उडाक
आकू – लडाकू, उडाकू, पढाकू, कूदाकू, हलाकू
इयल – अडियल, सडियल, मरियल, बढियल, दढियल
इया – जडिया, लखिया, धुनिया, नियरिया, दुनिया
ऊ – खाऊ, रट्टू, उतारू, चालू, बिगाडू, मारू, काटू
एरा – कमेरा, लुटेरा, झलेरा, पखेरा, हिलेरा
एया – कटैया, बचैया, परोसैया, भरैया
ऐत – लठैत, लडैत, चढैत, फिकैत
औडा – भगोडा, हँसोडा, मरोडा
वैया – खवैया, गवैया, देवैया, लेवैया
सार – मिलनसार, हिलनसार
हार – सेवनहार, खेवनहार, तारणहार, देवनहार,
हारा – सेवनहारा, खेवनहारा, तारणहारा, देवनहारा
ना – खाना, गाना, बोलना, रोना, पीना, सोना, आना, लेना, देना
नी – चटनी, सूँघनी, कहनी, छननी, ओढनी, घोटनी, पढनी, सुननी
आ – झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, घेरा
ई – रेती, फाँसी, गाँसी, चिमटी
ऊ – झाडू, माडू, काढू, साढू
न – झाडन, बेलन, जामन
ना – बेलना, कसना, ओढना, घोटना, रेतना, दलना
आवना – सुहावना, लुभावना, डरावना, हँसावना, रूलावना, गिरावना
ना – उडना, हँसना, सुहाना, रोना, लदना
नी – कहानी, सुननी, हँसनी, ओढनी, पहननी, जननी
वाँ – ढलवाँ, कटवाँ, पिटवाँ, चुनवाँ

क – बैठक, फाटक
ना – झिरना, रमना, पालना
आनी – कमानी, लुभानी, मिलानी
औना – खिलौना, बिछौना, उढौना
औनी – पहरौनी, ठहरौनी, मिथौनी, गवौनी, बुलौनी,
आवनी – छावनी, उठावनी, गिरावनी, बुलावनी, लुभावनी, मिलावनी, डोलवानी
इन – कमाइन, गन्धाइन, लियोइन, दियाइन
का – छिलका, किलका, चिलका
की – फिरकी, फुटकी, डुबकी, लुटकी
आ – जोडा, युवा, सर्राफा, बजाजा, बोझा
आइँद – कपडाइँद, सडाइँद, घिनोइँद, मघाइँद
आई – भलाई, बुराई, ढिठाई, चतुराई, पण्डिताई
आन – घमासान,ऊँचाई, निचान, लम्बान, चौडान, उडान,
आयत – बहुतायत, पंचायत, तिहायत, अपनायत
आवट – अमावट, महावट, गिरावट
आस – मिठास, खटास, निन्दास
आहट – कडुवाहट, चिकनाहट, गरमाहट, चिल्लाहट
औती – बपौती, बुढौती, छिनौती
त – चाहत, रंगत, मिल्लत
ती – कमती, बढती, घटती, चढती
पन – कालापन, लडकपन, बालपन, पागलपन,
पा – बुढापा, रंडापा, बहिनापा, मोटापा
स – आपस, धमस, तमस, रजस
इया – आढतिया, मखनिया, बखेडिया, मुखिया, रसोइया
एडी – भँगेडी, गँजेडी, नशेडी
एली – हथेली, भेली, तबेली
आऊ – अगाऊ, धराऊ, बटाऊ, पण्डिताऊ
ऐल – खपरैल, दुधैल, दन्तैल, तोन्दैल
ला – अगला, पिछला, मँझला, धुँधला, लाडला
वन्त – गुणवन्त, धनवन्त, दयावन्त, शीलवन्त
हरा – सुनहरा, रूपहरा
हा – हलवाहा, पनिहा, कविराहा
आ – झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, झोरा, घेरा
इया – खटिया, फुडिया, डबिया, गठरिया, बिटिया
ई – पहाडी, घाटी, ढोलकी, डोरी, टोकरी, रस्सी
की – कनकी, टिमकी
टा – रोंगटा, कलूटा
टी – चोटी, बहूटी
डा – चमडा, बछडा, दुःखडा, सुखडा, टुकडा, लँगडा
डी – टँगडी, पलँगडी, पँखडी, लालडी
री – कोठरी, छतरी, बांसुरी, मोटरी, गठरी, कुमारी
ली – टिकली
वा – बछवा, बचवा, पुरवा
सा – लालसा, अच्छासा, उडतासा, एकासा, मरासा
आना – राजपुताना, हिन्दुआना, तेलंगाना, उडियाना
इया – मथुरिया, कलकतिया, सरवरिया, कनौजिया
डी– अगाडी, पिछाडी
आर – दुधार, गँवार
इक – कार्मिक, धार्मिक, तार्किक, कारूणिक,
ई – आरी, ऊनी, देशी
उआ – मछुआ, गरूआ, खारूआ, फगुआ, टहलुआ
ऊ – ढालू, घरू, बाजारू, फेटू, गरजू, झाँसू
आई – वाकई, खनाई, जोताई, रेताई, जिताई
आर – बिलार, छीनार, दुत्कार, सत्कार, व्यवहार
आरी – दुधारी, दुवारी, बिलारी, किनारी
इय – कमनीय, गमनीय, दमनीय
एरा – घनेरा, कमेरा, जनेरा
एल – फुलेल, नकेल, अकेल
एला – अकेला, दुकेला, बघेला, मुरेला, अधेला, पेला, ठेला, मेला, रेला
ता – पाँयता, रायता
नी – चाँदनी, पैजनी, नथनी
वान – भाग्यवान्, मूल्यवान, गुणवान
वाला – रखवाला, बलवाला, दिलवाला, रंगवाला, घरवाला, ग्वाला, गानेवाला
ल – घायल, पायल, छागल, पागल
हट – आहट, बुलाहट, बौखलाहट

संधि

संधि का अर्थ–मिलान

संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

  जैसे –

प्रत्येक	–	प्रति + एक
विद्यालय	–	विद्या + आलय
जगदीश	–	जगत + ईश
आशीर्वाद	–	आशीः + वाद

संधि का परिभाषा

कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास–पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते है।

किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास–पास आते हैं तो कभी–कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते है। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

जैसे–	वर्ण	+	मेल	=	संधि युक्त शब्द
	रमा	+	ईश	=	रमेश
	आ	+	ई	=	ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ। संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

जैसे–	शुभ	+	आगमन	–	शुभागमन
	सत्	+	आचरण	–	सदाचरण
	निः	+	ईश्वर	–	निरीश्वर

- संधि के तीन भेद होते है–
  1. स्वर संधि
  2. व्यंजन संधि
  3. विसर्ग संधि

1. **स्वर संधि**

   स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होनें को ही स्वर संधि कहा जाता है।

   जैसे– विद्यार्थी – विद्या + अर्थी